Q. 1911 ई० की चीनी क्रांति के कारणों पर प्रकाश डालें?

Ans. चीन के राजनीतिक जीवन को वहाँ की प्राचीन राजनीतिक विचार धारा ने बहुत हद तक प्रभावित किया है। इस विचारधारा के अनुसार सारा देश एक राष्ट्रीय परिवार माना जाता था। इसका प्रमुख सम्राट होता था, जो विश्व के नैतिक विधान (तियन) का प्रतिनिधित्व करता था। जब तक "तियन" के आदेश का पालन करता था और जनता की भलाई में रत रहता था, तब तक वह आदर का पात्र बना रहता था। लेकिन जब वह अपने पथ से हट जाता था और लोगों के बुराई में लग जाता था तो उसे हटाना जनता का कर्तव्य हो जाता था। अकाल, बाढ, तूफान आदि प्राकृत प्रकृति के प्रकोप इस बात के सूचक थे कि "तियन" ने सम्राट से अपना "मिंग" (आज्ञापत्र) वापस ले लिया है। गरीबी, भुखमरी, और अव्यवस्था जनता को क्रांति का संदेश देती थी और सम्राट को हटाने के लिए प्रेरित करती थी। "कन्फ्यूशियस" ने कहा था कि पाप और दुराचार की अवस्था में पुत्र का कर्तव्य पिता का विरोध और मंत्री का कर्तव्य राजा का विरोध करना है। मेन्शियस ने लिखा है कि "यदि राजा अपनी प्रजा को घास और मिट्टी समझे तो प्रजा को उसे दस्यु और शत्रु समझना चाहिए।" ये भावनाएँ चीन में हमेशा राजनीतिक जागरूकता बनाए रही है, जो विद्रोह क्रांति और आन्दोलन के रूप में प्रकट होती आई है। 1911 ई० की चीनी क्रांति के संदर्भ में हम चीन की इस राजनीतिक विचारधारा को अपनी दृष्टि से ओझल नहीं कर सकते।

अतः इसके कारण निम्नलिखित थे।—

(1) विदेशी शोषण के विरुद्ध प्रतिक्रिया — अन्तर्राष्ट्रीय जगत में चीन ने हमेशा अपने को सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र माना है। वह अपने को विश्व सभ्यता का केन्द्र मानता था और चीनी राज्य "ईश्वरीय साम्राज्य" समझा जाता था। लेकिन, उन्नीसवीं सदी के अंत और 20वीं सदी के प्रारम्भ में चीन न तो विश्व सभ्यता का केन्द्र ही

Scanned with CamScanner

रहा और न संसार की अन्य जातियाँ बर्बर ही रही। दो अफीम युद्धों में पराजय के बाद चीन का सारा आत्माभिमान और गर्व गिरकर चकना चूर हो गया। जब यूरोपीय लुटेरों ने चीन का दरवाजा जबरदस्ती खोल दिया, तब से चीन पर आर्थिक प्रभुत्व कायम करने के लिए विभिन्न यूरोपीय देशों में एक भीषण होड़ प्रारंभ हो गई। चीन के बन्दरबाँट और लूट खसोट के क्रम में उस महान प्राचीन देश का भीषण आर्थिक शोषण प्रारंभ हुआ। चीन विभिन्न यूरोपीय राज्यों के मध्य प्रभाव क्षेत्रों में बाँट दिया गया और विदेशियों को चीन में कई तरह के विशेषाधिकार प्राप्त हुए। इन विशेषाधिकारों के कारण चीन की प्रभुसत्ता बहुत हद तक सीमित हो गई और चीन नाममात्र के लिए स्वतंत्र रह गया। चीन के कुछ देशभक्त नागरिक अपने देश की इस दुर्दशा से बहुत चिंतित रहते थे। उन्होंने समझ लिया कि जब तक इन्हें विदेशियों से छुटकारा नहीं मिलेगा, तब तक उनकी स्थिति में किसी तरह का सुधार नहीं होगा। वे मंचू शासन को चीनी जनता का विदेशियों द्वारा शोषण के लिए उत्तरदाई समझते थे।

(2) सुधारों की असफलता :- ऐसी स्थिति में देश को क्रान्ति से बचाने का एक उपाय होता है शासन-व्यवस्था में सुधार। चीन में सुधारों के लिए कुछ दिनों से आन्दोलन हो रहा था, लेकिन सम्राज्ञी त्जू शी एक प्रतिक्रियावादी शासिका थी और वह शासन-व्यवस्था में किसी तरह का परिवर्तन नहीं चाहती थी। इस हालत में चीन के देशभक्त यह सोचने के लिए मजबूर हो गए कि मंचू शासन का अन्त कर एक नई क्रान्तिकारी सरकार की स्थापना की जाए। विदेशी शोषण से देश की रक्षा के लिए यही एकमात्र उपाय था।

बॉक्सर विद्रोह के उपरान्त चीन के सुधारवादियों ने एक और प्रयास किया और सम्राज्ञी त्जु शी को कुछ सुधार योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए बाध्य किया। इसलिए चीन में सुधारों की एक योजना बनी और उसे लागू भी किया गया। सेना के संगठन में कई सुधार किए गए। 1905 ई० में चीन की पुरानी परीक्षा पद्धति समाप्त करने की आज्ञा जारी की गई और चीनी शासनयंत्र को आधुनिक ढंग पर ढालने का यत्न किया गया। रूस और जपान के युद्ध में जापान की विजय से चीन में सुधारवादी आन्दोलन को पर्याप्त बल मिला। यदि जापान पश्चिम तरीके अपनाकर पश्चिम को पराजित कर सकता है तो चीन ऐसा क्यों नहीं कर सकता? चीन के देशभक्तों के दिल में यह विचार प्रबल हो गया। इस हालत में चीन में सुधार आन्दोलन ने तीव्र रूप धारण कर लिया, लेकिन सरकार की ओर से सुधार-कार्य अत्यन्त धीमी गति से कार्यान्वित किए जा रहे थे। सरकार बहुत धीरे-धीरे कोई कदम उठाती थी। 1908 ई० में सम्राज्ञी त्जु शी की मृत्यु हो गई और उसकी जगह मंचू-राजकुमार

फू ची गद्दी पर आया। उसने सम्राज्ञी द्वारा प्रारम्भ किए गए शासन-सुधार जारी रखे। 1909 ई० में इसी के आदेशानुसार प्रान्तों में विधानसभाओं की स्थापना हुई। अक्तूबर 1910 में सम्पूर्ण चीन के चीन के लिए प्रथम बार राष्ट्रीय महासभा की स्थापना की गई। इस राष्ट्रीय महासभा में उग्रवादियों का बहुमत था और इसके सदस्यों ने शासनसुधार के कालिए बड़ी प्रबलता के साथ माँग शुरू कर दी। सुधारवादी लोग चीन में संसदीय शासन और वैध राजसत्ता की स्थापना चाहते थे। यदि इस समय मंचू वंश के शासक बुद्धिमानी से काम लेते और संसदीय शासन पद्धति की स्थापना के लिए कोई कदम उठाते तो सम्भव था कि उनके खिलाफ चीन में क्रान्ति नहीं होती और मंचू राजवंश कायम रह जाता, लेकिन मंचू-शासक अब तक एकदम बेकार घमण्डी हो गए थे और वे समय की गति नहीं पहचानते थे। उन्होंने संसदीय व्यवस्था कायम करने की माँग ठुकरा दी। इस हालत में क्रान्ति का होना अवश्यम्भावी हो गया।

(3) नए विचारों की उथल-पुथल :- चीन की नई में जागरण चीन की क्रान्ति का एक आधारभूत कारण था। बीसवीं सदी के शुरू में चीनी युवकों के मस्तिष्क में बड़ी बेचैनी थी। 1905 ई० में चीन की प्राचीन परीक्षा पद्धति का अन्त हो गया और राजकीय पदों पर नियुक्ति के लिए आधुनिक शिक्षा को महत्व दिया गया। इसलिए, 1905 ई० के बाद बहुत-से चीनी विद्यार्थी अमेरिका और यूरोप जाने लगे, लेकिन जो लोग यूरोप या अमेरिका नहीं जा सकते थे, वे

जापान में ही शिक्षा प्राप्त करने लगे। इस तरह चीनवालों का विदेशों से सम्पर्क कायम हुआ। वे यूरोप अमेरिका आदि देशों से बहुत प्रभावित हुए और अपने देश के उद्धार के लिए पाश्चात्य देशों के नमूने पर सुधार के पक्षपाती हो गए। इस समय जापान में बहुत-से ऐसे चीनी देशभक्त रहते थे, जो चीन की सरकार के कोपभाजन बने थे। चीन के जो विद्यार्थी जापान जाते थे उनका सम्बन्ध इन क्रांतिकारी संगठनों से अनिवार्य रूप से होता था और जब वे स्वदेश लौटते थे तो क्रान्तीकारी विचारों से ओतप्रोत होते थे। 1908 ई० में जो चीनी क्रान्तीकारी नेता जापान में आश्रय ग्रहण करने के लिए विवश हुए थे, वे इन चीनी विद्यार्थियों में बड़े उत्साह से अपने विचारों का प्रसार कर रहे थे। जापान के प्रभाव के कारण देश को मजबूत बनाने और समाज को आधुनिक रूप देने की प्रवृति जोर पकड़ रही थी।

(4) आर्थिक अधोगति :- चीन की क्रांति का एक और कारण था, आर्थिक दुर्दशा। आर्थिक दृष्टि से चीन की जनता में घोर अशान्ति थी। चीन की आबादी बड़ी तेजी से बढ़ रही थी और सरकार इसके भोजन का इन्तजाम नहीं कर पा रही थी। देश में जो खाद्य सामग्री उत्पन्न होती थी, वह जनता के लिए पर्याप्त नहीं थी। बढ़ती हुई आबादी के लिए अपना निर्वाह कठिन हो गया। इसके साथ ही चीन के लोग निरन्तर प्राकृतिक प्रकोप के शिकार होते रहे। देश में दुर्भिक्ष और बाढ़ों की प्रचुरता थी, जिसके कारण खेती को बहुत नुकसान पहुँचता था। 1910-11 में चीन की अनेक नदियों में भयंकर बाढ़ आई।

Scanned with CamScanner

इससे खेती तो नष्ट हुई ही, सहस्त्रों गाँव भी बह गए। लाखों व्यक्ति बेघरबार हो गए और उनकी आजीविका का कोई भी साधन नहीं रहा। ऐसा कहा जाता है कि क्रान्ति के पूर्व केवल एक साल तीन लाख के लगभग गरीब चीनी जनता भूख से तड़पकर मर गई। सरकार ने इस स्थिति में जनता की सहायता का कोई प्रबन्ध नहीं किया। इस तरह की आर्थिक स्थिति में क्रांति के विचारों का आना बिलकुल स्वाभाविक था। जनसंख्या की वृद्धि और सरकार निर्बलता के कारण इस समय चीन में प्राय: हर साल दुर्भिक्ष पड़ता था और बहुत से लोगों को मृत्यु का शिकार होना पड़ता था। इस कारण उनमें विद्रोह की प्रवृति प्रबल होती जाती थी। 1910-11 की बाढ़ तथा अकाल ने इस प्रवृति को और भी अधिक उग्र बना दिया।

(5) चीन के मजदूरों का प्रभाव :- देश की आर्थिक स्थिति से परेशान होकर चीन के लोग आजीविका की तलाश में विदेशों में जाकर बसने लगे। सबके पहले वे संयुक्त राज्य अमेरिका गए। कुछ दिनों तक अमेरिकी सरकार ने इसका कोई विरोध नहीं किया, लेकिन जब बहुत बड़ी संख्या में चीनी लोग अमेरिका पहुँचने लगे तो सरकार ने कानून बनाकर आगमन रोक दिया। जब अमेरिका का दरवाजा चीनियों के लिए बन्द हो गया तो वे पास-पड़ोस को अन्य देश - मलाया, फिलीपाइन्स, हवाई द्वीप इत्यादि - में जाकर बसने लगे। इस प्रकार, चीनी जनता का एक बहुत बड़ा भाग विदेशों के सम्पर्क में आया। यह भाग पढ़े-लिखे लोगों से भिन्न था और इसके द्वारा चीन के निम्न वर्ग में क्रान्ति की भावना ने प्रवेश किया। इस वर्ग के चीनी जब विदेशों से चीन लौटते थे तो वे नई

Scanned with CamScanner

भावना के साथ आते और चीन के लोगों को यह बतलाते कि किस तरह अमेरिका आदि देश उन्नत है और वहाँ की साधारण जनता की कैसी स्थिति है। चीन में क्रान्ति की भावना विकसित करने में इस बात से बड़ी सहायता मिली।

(6) क्रान्तिकारी प्रवृति का विकास :- बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में चीन में क्रान्तिकारी प्रवृतियों का जोर बहुत बढ़ गया और जैसा कि हम देख चुके हैं, क्रान्तिकारी दलों का संगठन व्यापक रूप से हुआ। बाक्सर विद्रोह के दमन के बाद चीन के कई क्रान्तिकारी दल नष्ट कर दिए गए थे, फिर भी चीन में क्रान्ति की भावना कभी दबाई नहीं जा सकी। बॉक्सर विद्रोह के तुरन्त बाद चीन में पुनः क्रान्तिकारी पार्टियाँ संगठित होने लगी। इन क्रांतिकारी संगठनों में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण था, जिसका नेता डॉ॰ सनयात सेन था।

(7) सनयात सेन का कार्य :- चीन के क्रान्तिकारियों को संगठित करने में डॉ॰ सनयात सेन का बड़ा ही महत्वपूर्ण हाथ था। उसका जन्म 1866 ई॰ में एक निर्धन परिवार में हुआ था। बारह वर्ष की आयु में वह हवाई द्वीप गया, जहाँ एक ईसाई पाठशाला में भर्ती हो गया। 1879 ई॰ से 1882 ई॰ तक उसने वहीं पश्चिमी विद्यालयों में शिक्षा पाई। 1882 ई॰ में वह चीन वापस आया और हांगकांग में अपनी शिक्षा जारी रखी। मई, 1884 में उसने ईसाई धर्म कबूल कर लिया। 1887 ई॰ में वह हांगकांग में मेडिकल कालेज में दाखिल हुआ और पाँच वर्ष तक चिकित्साशास्त्र का अध्ययन कर उस विषय में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। 1884-85 के बीच चीन को फ्रांस के मुकाबले बड़ा अपमान सहना पड़ा और मंचू-शासन निष्क्रिय पड़ा रहा। इससे डॉ॰

सनयात सेन और उसके कुछ अन्य सहयोगियों को जबरदस्त सदमा पहुँचा और वे सब मिलकर मंचू राजवंश के अन्त की योजना बनाने लगे। अन्ततः वे चीनी क्रांति के जन्मदाता सिद्ध हुए।

(8) "थुंग मेंग हुई" की स्थापना — चीन के नवयुवक छात्रों पर डॉ० सेन का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा। 1901 ई० में टोकियो में रहनेवाले चीनी छात्रों ने अपना एक संगठन बनाया और उसके माध्यम से प्रान्तीय अधिकारियों को केन्द्रीय शासन से अलग होने की घोषणा करने की प्रेरणा दी। डॉ० सनयात सेन ने इन छात्रों का पूरा समर्थन किया और इसके साथ गहरा सम्बन्ध स्थापित किया। सितम्बर, 1905 में चीन के अठारह में से सत्तरह प्रान्तों में कई सौ छात्रों ने मिलकर उसके नेतृत्व में थुंग मेंग हुई पार्टी की स्थापना की। इस दल का आदर्श चीन में मंचू-शासन समाप्त करना, पश्चात्य देशों के शोषण से चीन को मुक्त करना तथा देश की भूमि का राष्ट्रीयकरण करना था। इस दल के लोग चीन की सारी कठिनाइयों के लिए मंचू-शासन को जिम्मेवार मानते थे। अतएव, वे इस राजवंश के शासन को समाप्त करना क्रान्ति का प्रथम लक्ष्य मानते थे। उनके विचार में मंचू-शासन सभी पापों का मूल था और उसमें सुधार लाने का प्रश्न उठाना ही व्यर्थ था। उसे तो क्रान्ति द्वारा जल-मूल से उखाड़ फेंकना था।

(9) तात्कालिक कारण — 1911 ई० में जो क्रांति हुई, उसके कई तात्कालिक कारण भी थे। इस समय पिकिंग की केन्द्रीय सरकार के विरुद्ध प्रान्तीय शासकों में विरोध की भावना विकसित हो रही थी। चीन में रेलवे लाइनों का निर्माण करा रही थी।

चीन के कई प्रान्तपति चाहते थे कि सूबों में उन्हें ही रेलवे लाइनों के निर्माण का अधिकार मिले। लेकिन, पिकिंग की सरकार ऐसा करना नहीं चाहती थी। चीन की सरकार विदेशों से कर्ज लेकर इस काम को पूरा करना चाहती थी। विदेशी कर्ज लेने से चीन की केन्द्रीय सरकार पर विदेशियों का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। इस कारण प्रान्तों के शासक बड़े चिन्तित हो रहे थे और इस बात पर जोर दे रहे थे कि उनके अपने प्रदेशों में रेलवे निर्माण का भार उन्हीं के सुपुर्द कर दिया जाए। इस विषय पर केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों के बीच मतभेद बहुत बढ़ गया। प्रान्तों में केन्द्रीय शासन की नीति के कारण असन्तोष बहुत बढ़ गया और इसी समय जब एक विदेशी कम्पनी को एक रेलवे लाइन बनाने का अधिकार दे दिया गया तो क्रान्ति की लहर चारों ओर फैल गई। अनेक स्थानों पर मंचु-शासन के खिलाफ विद्रोह शुरु हो गया।

(10) हाँको की घटना और क्रान्ति का विस्फोट :- जेचुआन के आन्दोलन का प्रारम्भिक स्वरुप क्रान्तिकारी नहीं था। इसमें केवल रेलवे निर्माण की पूँजी के साझेदारों का हाथ था। लेकिन, जिस समय यह आंदोलन जोरों पर था, उसी समय 10 अक्टूबर 1911 को हाँको की रूसी बस्ती में एक घर में एक बम फट गया। यह घर क्रान्तीकारियों का अड्डा था, जहाँ बम बनाने का काम होता था। बम फटने से शोर मच गया और रूसी अधिकारियों ने बहुत-से विद्रोहियों को पकड़कर चीनी सरकार के वायसराय के हवाले कर दिया। उनके हाथ क्रान्तिकारियों की एक सूची भी पड़ गई, जिससे उनकी योजना का भण्डाफोड़ हो गया। पुलिस ने कुछ सैनिक अफसरों पर भी सन्देह कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

Scanned with CamScanner

इसपर सरकारी अफसरों के दमनचक्र से बचने के लिए फौज में जो क्रान्तिकारी थे, उन्होंने वायसराय के दफ्तर को घेर लिया और उसमें आग लगा दी। वायसराय भाग खड़ा हुआ और चीनी सेनापति ने भी शहर छोड़ दिया। जापान में शिक्षा प्राप्त एक कर्नल ली युआन हुंग ने क्रान्तिकारियों का नेतृत्व किया। विद्रोही सैनिकों ने उसके नेतृत्व में वूचांग पर अधिकार कर लिया। वहाँ जो हूपेह की प्रान्तीय विधान सभा की बैठक हो रही थी, उसने वूचांग पर भी क्रान्तिकारियों का समर्थन किया।

Scanned with CamScanner